विश्व शांति दिवस पर वे सब जानते हैं!

वे इस दुनिया के निगेहबान हैं
सब पर उनकी नज़र है
कुछ भी उनकी नजरों से छिपा नहीं है
जो आप नहीं जानते
अपने बारे में, अपने पड़ौसी के बारे में
अपने देश के बारे में, देशवासियों के बारे में
वे सब जानते हैं वे आपकी
किसी कल्पना के ईश्वर से भी बड़े हैं
आपके शरीर का ही नहीं
आपकी रूह का भी एक्सरे उनके पास है
आप की रूह के चारों ओर उनके अदृश्य
कैमरे चक्कर लगाते हैं
उनके लिये कुछ भी असंभव नहीं
उनसे कुछ भी छिपाकर नहीं रख सकते आप
पूरे ब्राह्मांड की खबर उनके पास
वे दिन-रात आपकी
इस दुनिया की चिंता में ही लगे रहते हैं वे
इस सृष्टि के रखवाले हैं, सर्वेश्वर हैं,
उनके पास दिव्य दृष्टि है, दिव्य शक्ति है,
दिव्य भक्ति है
जो चीज़ आप नहीं देख सकते
वे उसे भी देख सकते हैं वे
आपकी जिंदगी के
शांति के, सुरक्षा के ठेकेदार
दिन-रात आप ही के लिये बनाते हैं हथियार!
नित नये भस्मासुरों को करते हैं तैयार!
ईश्वर की तरह! उनकी लीला अपरंपार!
आप तो नहीं देख सकते
भयंकर जनसंहारक रासायनिक हथियारों को
पर वे देख लेते हैं, उतर पड़ते हैं मानवता
की रक्षा के धर्म युद्ध में
इस महान धर्म युद्ध का सजीव चित्रण
देखा आपने महान पटकथा,
स्पेशल इफ़ेक्ट के साथ!
जीवन का सच, फ़िल्मी झूठ जैसा
बनी बनाई एक वास्तविक दुनिया,
युद्ध के फ़िल्मी सैट की तरह तबाह हो जाती है
पलभर में जादू की तरह!
जादूगर की संदूक में बंद एक लड़की
जादूगर की तलवार चलती है
आधी कटी हुई लड़की, सर अलग,
धड़ अलग
और फ़िर पलक झपकते ही
लड़की हंसते हुए उठ खड़ी होती है
अपने मानवीय अधिकार के साथ
जैसे कुछ घटा ही नहीं, बस आंखों का धोखा
भ्रम का सुख, एक सम्मोहन!
जादूगर नहीं उठता, भ्रम से पर्दा
ये पर्दा ही उसका धंधा है!
लड़की कभी नहीं
चाह कर भी नहीं कर पाती अपने मन की बात,
पर आप तो मालिक हैं
कोई छोटे-मोटे चिरकूट जादूगर नहीं!
जब भी कोई कर्मवीर होता है शंकित
उठाने से मना कर देता है हथियार,
आप का कोई तर्क उसे नहीं समझ आता
तब आप दिखाते हैं अपना विराट रूप!
आंखें चौधियां जाती है,
वो चिल्लाता है,
हे प्रभु इसे देखने में मेरी मदद करो!
और प्रभु कहते हैं, मत घबराओ!
तुम मेरी शरण में हो,
मोर्चे पर तैनात हो जाओ!
यह धर्म युद्ध है!
युद्धों का शास्वत शिलालेख!
जीवन नश्वर है, आत्मा अमर है, मत डरो!
पर फ़िर भी कभी कोई भक्त,मृत्यु से डरकर
जब अमरता पाना चाहता है
तुम देते हो उसे दूसरे को भस्म करने का वरदान
और वह मूर्ख जब तुम्हीं पर आज़माना
चाहता है तुम्हारा वरदान
तब तुम नौ दो ग्यारह हो जाते हो
अपने ही भक्त से क्यों डर जाते हो तुम? क्यों
किसी मोहिनी मूरत का सहारा लेकर
उसको धोखे में फंसाकर
उससे अपनी जान बचाते हो!

-सरला माहेश्वरी

ईएसआई अस्पताल में सुविधायें होती तो.....

पेज एक का शेष

अधिकारी गत दो वर्षों से यहां के मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एम आर आई व सीटी स्कैन उपकरण लगाने के लिये पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप्ट)के तहत किसी पार्टी की तलाश का नाटक कर रहे हैं। सब जानते हैं कि पीपीपी मोड में पूंजी कोई तभी लगायेगा जब उसे मोटा मुनाफ़ा दिखाई देगा। ईएसआई में वह संभव नहीं है। इसके बावजूद, खरबों रुपये के खजाने पर कुंडली मारे बैठे भ्रष्ट अधिकारी उक्त उपकरण यहां नहीं लगने दे रहे हैं। हज़ार करोड़ का मेडिकल कॉलेज व अस्पताल तो खड़ा कर सकते हैं लेकिन 5 करोड़ के उपकरणों के लिये ये लोग प्राइवेट पार्टनर ढूंढते फ़िर रहे हैं बीते 2 वर्षों से। पीपीपी मोड का एक ड्रामा आईसीयू के नाम पर यहां पहले से ही चल रहा है। इंटेशिव केयर यूनिट के इस वार्ड में 30 बैड है। प्रति बैड भरने पर आईसीयू के ठेकेदार को डेढ़ लाख रुपये मिलते है। यदि 30 दिन तक तीसों बेड भरे रहे तो ठेकेदार के 45 लाख खरे। गत एक माह, जब से यह शुरू हुआ है सभी बेड फुल चल रहे हैं।

जैसा कि वार्ड के नाम से ही स्पष्ट है, यहां मरीज की सघन निगरानी लगातार चलती है, यानी एक मिनट को भी निगरानी बंद नहीं होती। जाहिर है इसके लिए तीनों शिफ्टों में ट्रेंड एवं कुशल स्टाफ का होना आवश्यक है। यदि ठेकेदार इस आवश्यक शर्त को पूरा करने लगे तो उसकी कमाई तो गयी ऐसी तैसी में पल्ले से और भुगतान करना पड़े। इसलिए ठेकेदार ने जरूरत का मात्र एक तिहाई स्टाफ ही रखा हुआ है, वह भी अर्ध कुशल।

अधिक मुनाफा कमाने के लिए ठेकेदार ने ईएसआई कारपोरेशन से कैथ लैब चलाने का अनुबंध भी कर रखा है। कैथ लैब हृदयरोग से संबंधित वह धंधा है जिसमें यहां के तमाम व्यापारिक अस्पताल एनजियोग्राफी करके हृदय की रक्त वाहिनियों में छल्ला (स्टंड) डाल कर लाखों वसूलते है। इस काम के लिए ईएसआई भी अपने मरीजों को इनके पास भेज कर मोटे भुगतान करती आई है। लेकिन केंद्र सरकार द्वारा छल्लों के दाम तय कर देने से इस धंधे में थोड़ा व्यवधान आ गया हैं। जानकारों के मुताबिक व्यापारिक अस्पतालों ने इस व्यवधान का भी तोड़ निकाल लिया है।

अब ईएसआई अस्पताल में आईसीयू का ठेकेदार भी इसी तोड़ का इस्तेमाल करके अपना लूट का कारोबार बढ़ाने की फिराक में है।

पर्याप्त स्टाफ़ न होने पर एमसीआई को एतराज और मरीज़ों को परेशानी

फ़रीदाबाद (म.मो.) ईएसआईसी मुख्यालय में बैठे जनविरोधी एवं निकम्मे अधिकारियों की तमाम तिकड़मों के बावजूद जैसे-तैसे यहां का मेडिकल कॉलेज चल तो गया लेकिन तिकड़मबाज अधिकारी अब भी अपनी तिकड़मों से बाज नहीं आ रहे हैं। यह हाल तो तब है जब निगम के डीजी दीपक कुमार आई.ए.एस. तथा केन्द्रीय श्रम सचिव एम सथियावथी आई. ए. एस. हर माह इनकी तिकड़मों को लेकर इन्हें लताड़ते हैं। लताड़ने से आहत होकर ये लोग थोड़ा-बहुत काम तो करते हैं लेकिन रोते-पीटते व अनमने मन से। डीजी व सचिव को इन ढीठ लोगों से निपटने के लिये और अधिक सख्ती से पेश आना चाहिये। उक्त सारे अधिकारी जानते हैं कि एम.सी.आई. (मेडिकल काऊंसिल ऑफ़ इन्डिया) हर साल मेडिकल कॉलेज व अस्पताल का निरीक्षण करती है उसके बावजूद ये लोग उन कमियों को पूरा नहीं करते जिन पर एमसीआई एतराज करके मेडिकल कॉलेज का दाखला रोक सकती है। यह सब तो तब है जब केन्द्रीय श्रम सचिव ने स्पष्ट आदेश दे दिया है कि निरीक्षण के समय यदि कोई कमी पाई जायेगी तो वे एमसीआई के पास किसी तरह का आश्वासन देकर मेडिकल कॉलेज का दाखला बचाने नहीं जायेंगी। एमसीआई मानकों के अनुसार यहां पैरामेडिकल स्टाफ़ के 600 कर्मचारी होने चाहिये लेकिन हैं केवल 160, उनमें से भी 100 ठेकेदारी में हैं जिन्हें एमसीआई उचित नहीं मानती। 250 क्लेरिकल स्टाफ़ की जगह मात्र 30 ही हैं। फेकल्टी (प्रोफ़ेसर आदि) 100 की जगह 80 ही मौजूद है। इसी तरह 100 रेजिडेंट डॉक्टरों की जगह भी मात्र 80 से काम घसीटा जा रहा है।

फैकल्टी को भर्ती करने का जो तरीका अपनाया जा रहा है वह बिल्कुल अव्यवहारिक एवं मूर्खतापूर्ण है। जब समय बिल्कुल समाप्त होने लगता है तब तो ये लोग पोस्टें विज्ञापित करते हैं। उसके बाद चयन प्रक्रिया बिल्कुल बेढंगी होती हैं। सेवा शर्तें ऐसी होती हैं कि कोई ढंग का प्रोफ़ेसर टिके नहीं। जितनी पोस्ट होती हैं उतनों का ही चयन करके प्रक्रिया बंद कर देते हैं। लेकिन जब उन्हें नियुक्ति के लिये बुलाया जाता है तो कुछ लोग आते ही नहीं, क्योंकि लम्बी चल चुकी प्रक्रिया के दौरान बहुत से लोग कहीं न कहीं बेहतर जगह एडजस्ट हो चुके होते हैं। अगर ये लोग थोड़ी सी अक्ल का इस्तेमाल करके अच्छी सी वेटिंग लिस्ट बना लें तो क्या हर्ज है, इस पर कोई खर्चा तो लगता नहीं। और फ़ेकल्टी को यदि 2-3 माह पहले भर्ती कर लें तो कौन सी बड़ी आफत आ जायेगी।

हां आफ़त जो है वह पहली अप्रैल 2018 के बाद कभी भी आ सकती है। इस तिथि के बाद एमसीआई यहां 500 बेड के लिये पर्याप्त स्टाफ़ व उपकरण आदि का निरीक्षण करने कभी भी आ सकती है। नये कॉलेजों का निरीक्षण तो एम.सी.आई. कुछ समय देकर, ठहर कर करती है परन्तु 3 सत्र चला चुके मेडिकल कॉलेज का निरीक्षण करने तुरन्त आ पहुंचती है। नालायक व निकम्मे अफ़सरों की नालायकी का अनुमान अभी से लगाया जा सकता है कि जून-जुलाई 2018 में एमसीआई यहां क्या करने वाली है।

मौत के बाद भी सुकून नहीं बीके अस्पताल में

फ़रीदाबाद (म.मो.) बादशाह खान अस्पताल के अधिकारियों की लापरवाही के कारण यहां दाखिल होने वाले मरीजों को तो कई तरह की परेशानियों का सामना करना ही पड़ता है। लेकिन इसी लापरवाही के कारण मृत्यु के बाद यहां आने वाले शवों की अस्पताल की मोरचरी में कम दुर्गति नहीं होती। अस्पताल की मोरचरी में शवों को रखने के लिए कुल चार रैफ्रीजरेटर है, जिन में तीन कंडम हालत में बंद पड़े है। शवों को रखने के लिए एक मात्र रैफ्रीजरेटर चालू हालत में है। जिसमें मात्र चार शवों को रखने की व्यवस्था है। जबकि अस्पताल में इससे कहीं ज्यादा संध्या में शव पोस्टमॉर्टम के लिए आते है। अज्ञात मृतकों के शव को 72 घंटे रखना अनिवार्य है। जिसके कारण मोरचरी में शव रैफ्रीजरेटर के अभाव में खराब हो जाते है। इसके अलावा मोरचारी में चूहों और नेवलों द्वारा शवों को कुतर खाने की घटनाएं अक्सर होती रहती है। सब कुछ जानने के बावजूद जिला सिविल सर्जन डॉ. गुलशन अरोड़ा अपनी आंखे मूंद कर बैठे है।

जानकारी के मुताबिक राज्य सरकार जहां जिले के बादशाह खान अस्पताल में अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने का दावा कर रही है। वहीं दूसरी तरफ स्वास्थ्य विभाग और बादशाह खान अस्पताल के अधिकारी सरकार के दावों को खोखला साबित करने पर तुले हुए है। अस्पताल में आने वाले मरीजों को किस तरह की सुविधाएं मिल रही है, यह तो सभी को पता है। लेकिन इसके साथ साथ अस्पताल की मोरचरी की हालत भी कम बदत्तर नहीं है। जिले का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल होने के कारण यहां पोस्टमॉर्टम के लिए हर रोज औसतन आधा दर्जन शव आते है। लेकिन जितनी संध्या में यहां शव आते है, उसके मुताबिक यहां रैफ्रीजरेटरों की संध्या बहुत कम है। मोरचरी में चार रैफ्रीजरेटर और शव रखने के लिए एक एसी कक्ष है। इनमें से तीन रैफ्रीजरेटर कंडम होकर बंद हो चुके है। शव रखने के लिए एक मात्र रैफ्रीजरेटर ही चालू है। एसी कक्ष का एसी ज्यादातर खराब रहता है। जिसके कारण यहां शव अक्सर बुरी तरह सड़ जाते है। कई बार एसी कक्ष में घुस कर चूहे और नेवले शवों को नोंच डालते है। गत 26 दिसंबर 2013 को पर्वतीय कालोनी निवासी 55 वर्षीय सत्यप्रकाश नामक व्यक्ति के शव को भी चूहों ने कुतर डाला था। इस तरह की कई घटना मोरचरी में हो चुकी है। ज्यादा संध्या में शव आने पर उन्हें बिना रैफ्रीजरेटर के ही रखना पड़ता है। सबसे ज्यादा बुरी दुर्गति यहां आने वाले अज्ञात शवों की होती है। इन शवों को पहचान के लिए कम से कम 72 घंटे मोरचरी में रखना जरूरी होता है। ऐसे में बिजली जाने पर इन शवों की हालत बेहद खराब हो जाती है। इसके अलावा मोरचरी में स्थित कर्मचारियों के बैठने के कक्ष की हालत भी बद से बदत्तर हो चुकी है। कर्मचारियों के इस कक्ष में पंखा तक नहीं लगाया गया है। जिसके कारण कर्मचारियों को मजबूरी में गर्मी और दुर्गंध से बचने के लिए बाहर खुले में बैठना पड़ता है। ऐसा नहीं है कि इस बारे में जिला सिविल सर्जन डॉ. गुलशन अरोड़ा को पता नहीं है। गत 9 मई 2016 को जब स्वास्थ्य आयुक्त पीके महापात्रा बीके अस्पताल के दौरे पर आए थे, उस समय पत्रकारों ने उन्हें इस समस्या से अवगत करवाया था। उस समय सीएमओ गुलशन अरोड़ा ने मामले में लीपा पोती करते हुए समस्या को जल्दी ही दूर करने का आश्वासन दिया था। लेकिन यह समस्या त्यूं की त्यूं बनी हुई है।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**